Knowledgeable Research Vol 1, No 1, August 2022. ISSN 2583-6633

Knowledgeable Research
An International Open-access Peer-reviewed Journal

Vol-1, No-1, August 2022
Web: http://www.knowledgeableresearch.com/
https://doi.org/10.57067/pprt.2022.1.1.4

ग्रामीण एवं सामाजिक चेतना में फणीश्वरनाथ रेणु का हिन्दी कहानी साहित्य

डॉ महेंद्र सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर ,हिंदी विभाग ,गन्ना कृषक कॉलेज,बलरामपुर

mpsingh05@gmail.com

****

सार-संक्षेप :

फणीश्वरनाथ रेणु की प्रसिद्धि ग्रामकथा-लेखन और यथार्थवादी से हुआ है। फणीश्वरनाथ रेणु को विशेषतः मैला आँचल' और 'परती परिकथा के रूप में याद किया जाता है जबकि रेणु जी ने पाँच दर्जन से अधिक कहानियों की भी रचना की है। रेणु की पहली औपन्यासिक कृति मैला आँचल का प्रकाशन में हुआ। उसे गोदान के बाद का दूसरा महाकाव्यात्मक उपन्यास माना गया।

'रेणु' के आशावान मन शैक्षणिक प्रगति से गांव की सामूहिक प्रगति का सपना देखता है, जातीयता का टूटन चाहता बहुत कुछ बदलाव आता भी है। गांव के नवयुवक और स्त्रियां जितेन्द्र की हवेली में आने लगती है। नवयुवक सुवंश- मलारी के प्रेम संबंधों को लेकर उठे वितंडावाद में उसका साथ देते हैं। शिक्षा औद्योगीकरण एवं आधुनिकीकरण गांव को नयी मानसिकता प्रदान करते है। अंधविश्वासों के जड़बद्धता संस्कार अब हिलने लगे हैं। रेणु को ग्राम परिवेश का समग्र बोध है। उन्हें उसके यथार्थ की गहरी परख और पहचान है जिसे वे लोक तत्वों की समाहिति से और भी गहरा चित्रित करते हैं। इस चित्रण में 'रेणु' विभिन्न बारीकियों, अनेक कोणों एवं विविध आयामों से परिवेश की जीवन्त सृष्टि करते हैं।

कुंजी : यथार्थवादी, शिक्षा, जातीयता, ग्रामकथा और लोक।

****

परिचय :

फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म 4 मार्च, 1921 में औराही हिंगना नामक गाँव, जिला - पूर्णिया (बिहार) में हुआ था। प्रेमचन्द की भाँति फणीश्वरनाथ रेणु की प्रसिद्धि भी ग्रामकथा-लेखन और यथार्थवादी दृष्टिकोण के लिए है। प्रेमचन्द बड़े कहानीकार है या उपन्यासकार इस सम्बन्ध में आलोचकों में मतभेद है। कुछ यही स्थिति फणीश्वरनाथ रेणु की है। विशेषतः मैला आँचल और परती परिकथा के कारण उन्हें एक कालजयी लेखक के रूप में याद किया जाता है जबकि रेणु जी ने पाँच दर्जन से अधिक कहानियों की भी रचना की है। उनकी कहानियाँ नयी कहानी के ग्रामांचल के कहानीकारों के बीच भी अलग से पठनीय और मूल्यांकन

Knowledgeable Research Vol 1, No 1, August 2022. ISSN 2583-6633

योग्य है। उनकी प्रमुख प्रकाशित पुस्तकें हैं मैला आँचल, - परती परिकथा, दीर्घतपा जुलूस, (उपन्यास) - ठुमरी, अगिनखोर, आदिम रात्रि की महक, एक श्रावणी दोपहरी की धूप, सम्पूर्ण कहानियाँ (कहानी-संग्रह), रेणु रचनावली (समग्र) प्रमुख है।उन्होंने प्रेमचन्द की परम्परा को आगे बढ़ाने का श्रेय उपन्यास के क्षेत्र में की है तो कमोबेश यही उपलब्धि उनकी कहानियों में भी है। उन्होंने रसप्रिया', 'लाल पान की बेगम', 'पंचलाईट', 'संवादिया और तीसरी कसम अर्थात् मारे गए गुलफाम जैसी अमर कहानियाँ लिखी है तो अतिथि सत्कार, नैनाजोगिन' और 'एक आदिम रात्रि की महक जैसी प्रयोगशील कहानियाँ भी लिखी है। उनकी कहानियों में अन्तर्वस्तु के अनुरूप ही शिल्प-विधान भी विलक्षण होतासम्पूर्ण कहानिया (कहानी-संग्रह), रणु रचनावली (समग्र) प्रमुख है।उन्होंने प्रेमचन्द की परम्परा को आगे बढ़ाने का श्रेय उपन्यास के क्षेत्र में की है तो कमोबेश यही उपलब्धि उनकी कहानियों में भी है। उन्होंने रसप्रिया, लाल पान की बेगम', 'पंचलाईट', संवादिया और तीसरी कसम अर्थात् मारे गए गुलफाम जैसी अमर कहानियाँ लिखी है तो अतिथि सत्कार, नैनाजोगिन और एक आदिम रात्रि की महक जैसी प्रयोगशील कहानियाँ भी लिखी है। उनकी कहानियों में अन्तर्वस्तु के अनुरूप ही शिल्प-विधान भी विलक्षण होता है।

फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों और कथेतर गद्यसाहित्य पर अनेक शोध कार्य हुए हैं। उनपर आलोचना-ग्रंथ भी लिखे गए हैं किन्तु विशेष रूप से उनकी कहानियों का समग्रता में अध्ययन नहीं हुआ है। रेणु की कुछ कहानियाँ तो कथा रस-निष्पत्ति की दृष्टि से अतिविशिष्ट हैं। उनमें कहानी कला की सभी विशेषताएँ संतुलित रूप में मिलती हैं। पाठक के लिए उनकी कहानियों में विशेष आकर्षण होता है। रेणुजी अंचल विशेष की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विशेषताओं को अद्‌भुत भाषा कौशल के साथ उजागार करते हैं। उनके चरित्रों की छटा भी निराली है। रेणु की कहानियों में जिस भाषा का प्रयोग हुआ है, वह जहाँ कहीं आंचलित हैं वहाँ अद्‌भुत अपूर्व हो गयी है। समझा जाता है कि अच्छी कविता अपनी परिणति में भाषा के स्तर पर गद्यमत हो जाती है ओर अच्छा गद्य अपनी परिणति में श्रेष्ठ कविता में ढल जाता है। रेणु की कहानियों की भाषा इतनी सृजनात्मक है कि सिपर्फ भाषा विश्लेषण से ही उनके कथा-जनपद का सूक्ष्म अध्ययन किया जा सकता है। इस दृष्टि से प्रस्तुत शोध-प्रबंध का औचित्य सिद्ध होता है। से सोतों से उपलबा के लिए अपेक्षित है।

रेणु का कथा साहित्य : सामाजिक परिवेश

साहित्यकार जागरुक और संवेदनशील प्राणी होने के नाते अपने चतुर्दिक परिवेश से प्रभावित होकर अपनी प्रतिक्रिया अपनी रचनाओं में व्यक्त करता है। रेणु ग्रामीण जीवन को समग्रता में चित्रित करने वाले कुशल शिल्पी माने गए हैं। रेणु ने अपने कथा साहित्य में पूर्णिया जिले के विभिन्न अंचलों में बसने वाले समाज का यथार्थ चित्रण किया है। उनकी रचनाओं में १९४२ से लेकर १९७६-७७ तक की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, परिस्थितियों का यथार्थ एवं जीवंत चित्रण मिलता है। यह युग संक्रमण कालीन युग माना जाता है। इस युग में जीवन के हर स्तर पर तीव्र गति से परिवर्तन हुए हैं। रेणु ने इस बदलते परिवेश को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया हैरेणु जिस परिवेश में जन्मे, पले-बढ़े और जीये हैं, वहाँ का जीवन बहुत कष्ट पूर्ण और अज्ञानता एवं अंधा विश्वासों के जाल में जकड़ा हुआ था । रेणु ने मनुष्य की पीड़ा, मजबूरी, गरीबी, शोषण को बहुत ही करीब से देखा और तटस्थ भाव से उसका चित्रण भी किया 1 "मैला आँचल" की भूमिका में रेणु लिखातें हैं, "इसमें फूल भी है शूल भी, धूल भी हे गुलाल भी, कीचड़ भी है चंदन

.

Knowledgeable Research Vol 1, No 1, August 2022. ISSN 2583-6633

भी, सुंदरता भी है कुरूपता भी मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया ।अच्छाइयाँ और बुराइयों के साथ साहित्य की दहलीज पर आ बाड़ा हुआ हूँ, पता नही अच्छा किया या बुरा जो भी अपनी निष्ठा मैं कमी महसूस नहीं करता समाज के प्रति रेणु की यह निष्ठा आपंत बनी रही।

गाँव में पढ़े-लिखो लोगों की संख्या कुल दल, नए पढ़ने वाले लोगों की संख्या पन्द्रह है मुश्किल से । पशु से भी सीधे हैं ये इंसान और पशु से भी ज्यादा शृंगार हैं ये । गाँव के लोग बड़े सीधे दिखाते हैं, सीधे का अर्थ यदि अपढ़ उज्ञानी और अंधविश्वासी हो तो वास्तव में सीधे हैं वे जहाँ तक सांसारिक बुध्दि का सवाल है, वे हमारे और तुम्हारे जैसे लोगों को दिन में पाँच बार ठग लेंगे। "समाज में छूआछूत की जड़ें बहुत गहरी हैं। उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोगों के साथ बैठकर भोजन नहीं करते। बिरंची को तहसीलदार ने एक बार पूड़ी जलेवी खिलाई थी। गाँव में न जाने कैसे यह हल्ला हो गया कि बिरंची ने तहसील का झूठा बिरंची के सिर पर सात घंटे तक घौला सुपाड़ी रखाने की सजा दी गई थी - पाँच सपारी पर घौला भर पानी एक बूँद भी पानी गिरा कि ऊपर से झाड़ू की मार । - आखिर पाँच रूपया जुर्माना और जाति के पंडित जी को एक जोड़ी धोती देकर बिरंची ने अपना हुक्का पानी खुलवाया। ब्राहमण लोग भी साथ भोजन करने से मना कर देते हैं।

अपने साहित्य में बाल-विवाह, विधवा विवाह, अनमेल विवाह, वाद और उन्ततीय विवाह का जिक्र भी है। मला का दो साल की उम्र मैं रेदास नामक युवक से विवाह हुजा था। यह बात विधाया हो गयी थी। फिर उसने या नामक युवक से प्रेम विवाह किया जो उच्च जाति का था। मै ने बुढापे में अट्ठारह वर्ष की तड़की से विवाह किया। पल्टू बाबू रोड" के पलटू बाबूने पचासी का की उम्र में कुंतता नाम से विवाह किया और सुहाग रात को ही पल बने परती परिया केश मिश्र ने पहली पत्नी के होते दूसरी शादी की और फिर दोनों पत्नियों के साथ पति कार्म निभाया। बाद में गीतामित्र को त्याग दिया।

रेणु ने अपने कथा-साहित्य में जमीन-जायदाद को लेकर मानवीय संबंधों में उत्पन्न तनाव का भी चित्रण किया है। परती परिकथा में लैंड सर्वे सेटलमेंट के समय परानपुर ग्राम के प्रत्येक परिवार का व्यक्ति एक दूसरे पर संदेह करता है क्या गरीब। क्या अमीर अब परिवार का एक-एक प्राणी दूसरे की ओर संदेह भरी निगाह से देखा रहा है। एक - एक आदमी अपने को एक किला बना रहा है। सभी कछुए हुए जा रहे हैं ..। प्रत्येक परिवार में लड़ाई - झागड़े और कलहपूर्ण वातावरण है। "शाम होते ही घर घर में लड़ाई शुरू हो जाती है। कोई लड़ैया भूत की सवारी आती है शायद। एक घार का झागडा दसरे हार की ओर लपकता फैलता जाता है। गाँव में एक अजीब कोलाहल ।

रेणु की दृष्टि निराशावादी ! नहीं है। समाज की जहालत भरी जिंदगी में आशा की किरण भी है। रेणु की मान्यता है कि "परानपुर ही नहीं सभी गाँव टूट रहे हैं। गाँव के परिवार टूट रहे हैं, व्यक्ति टूट रहा है रोज रोज, काँच के - बर्तनों की तरह। .. नहीं । निर्माण भी हो रहा है। नया गाँव, नए परिवार और नए लोग "लाल पान की बेगम" कहानी में भी जहाँ एक ओर स्त्री डाह का चित्रण है तो दूसरी ओर सभी स्त्रियाँ मिलजुल कर मेला देखाने भी जाती है। एक हरिजन लड़की पट्ट-लिखा कर मास्टरनी बन जाती है यह भी सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन का परिचायक है। अन्तर्जातीय विवाह दिखाकर रेणु ने समाज में जातिवाद के बंधान ढीले पड़ने के संकेत दिए हैं।

.

Knowledgeable Research Vol 1, No 1, August 2022. ISSN 2583-6633

"रेणु" के साहित्य पर यद्यपि राजनीति हावीं नहीं है तथा उनका समाजवादी चिंतन छिपे नहीं रह सका। स्वयं समाजवादी होते हुए भी उन्होंने मैला आँचल के बावनदास कांग्रेसी एवं आत्मसाक्षी' कहानी के साम्यवादी गनसत के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की है। समाजवाद के बिना स्वतंत्रता असार्थक है यह वे समझते थे। इसलिए 15 अगस्त 1947 की स्वतंत्राता को वे सच्ची स्वतंत्रता नहीं मानते। इसी कारण मेरीगंज के स्वराज्योत्सव में औराही हिंगना का एक समाजवादी कार्यकर्ता नारा भी लगाता है कि यह आजादी झूठी है और यह यह समाजवादी व्यक्ति कोई और नहीं स्वयं रेणु है, जो अपने जन्म-ग्राम औराही हिंगना से मैला आँचल" के मेरीगंज में आ पहुँचता है। ग्रामीण समाज में "रेणु" ने जीवन मूल्यों के घात-प्रतिघातों को यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत है।

"रेणु" की दृष्टि में मेरीगंज गांव की बीमार सामाजिक स्थिति के दो कारण हैं - बेकारी और गरीबी जिनके रणु न जीवन मूल्या क घात-प्रातधाता का यथाथ के धरातल पर प्रस्तुत किया है।""रेणु' की दृष्टि में मेरीगंज गांव की बीमार सामाजिक स्थिति के दो कारण हैं - बेकारी और गरीबी जिनके कारण सारा गांव विभिन्न जड़ताओं एवं अभावों का भयानक शिकार है। अन्न-वस्त्र जैसी मौलिक आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं हो पाती है। वर्ग-वैषम्य अपने उग्र रूप में विद्यमान है। मुट्ठी भर अन्न ओश्र तन की लाज मात्र ढ़कने के लिए वस्त्र जुटा सकने में असमर्थ व्यक्ति तिल-तिल मर रहे हैं। जमीन्दार खटमलों की भांति इस सर्वहारा वर्ग को चूसते हैं। जड़ता ऐसी कि विवश और छटपटाती जिन्दगी जीकर भी वे उफ तक नहीं करते। डॉक्टर प्रशान्त भी हतप्रभ हैं कि किस कठोर नियति ने इन हजारों क्षुधितों को अनुशासित कर रखा है? कफ से जिनके दोनों फेफड़े जकड़े हुए और जिन्हें ओढ़ने को वस्त्र नहीं और सोने के लिए चटाई तक उपलब्ध नहीं है।भींगी धरती पर लेटकर न्यूमोनिया का रोगी मरता नहीं जी जाता। जड़ता की ऐसी विकट स्थिति है कि मूल आवश्यकताओं को पूर्ण करना भी यहां विलासिता मानी जाती है। दोनों समय का भोजन यदि किसी को मिल जाए तथा तन ढकने को वस्त्र तो वह व्यक्ति स्वयं को खुशहाल समझता है और लोगों की नजरों में भी निर्धन नहीं माना जाता है। निर्धन भूखे और नंगे ही रह जाते है और घुट-घुट कर अन्न वस्त्र और दवा के अभाव में दम तोड़ते हैं। लेकिन सम्पन्न वर्ग का जीवन नित्य नई सुविधाओं से मुक्त होता जाता है।मेरीगंज की सामाजिक स्थिति में असामाजिकता के तत्व उभरते हुए दिखाई पड़ते हैं। गांव में बारहों वर्णों के लोग हैं। यहाँ मुसलमान एक भी नहीं है। देश-विभाजन के समय लोग सोचते हैं - बड़े भाग से मेरीगंज बच गया। दस मुसलमान भी होते तो पाकिस्तान लेकर ही छोड़ता । "23 छोटे-मोटे धंधे करने वाले मुसलमान बीच-बीच में मेरीगंज आते रहते हैं। स्वराज्य प्राप्ति के समय हुए हिन्दू मुस्लिम दंगों के समय ऐसे ही एक गरीब मुसलमान जुमराती से सुमिरनदास ने पांच रूपये छीन लिए। बालदेव हिंदू और मुसलमान के साम्प्रदायिक दंगों से अवश्य विचलित दिखाई पड़ता है। उसे लगता है कि अंधेर हो गया। एक दम सब पगला गये हैं। उसे कीर्तन की पंक्तियां याद हो आती है –

अरे, चमके मन्दिरवा में चांद

मसजिदवा में वंसी बाजे"

इसी प्रकार जीवन के विभिन्न आयाम "मैला आँचल" में स्पष्ट रूप से उद्घाटित हुए हैं। परती परिकथा की कथा का आधार है परानपुर गांव, जो प्रतीक बनकर आया है। यह ग्राम काल्पनिक सम्भावना पर आधारित है और स्वतंत्रता के पश्चात् के संक्रमण-कालीन भारतीय गांवों का प्रतिनिधित्व करता है।

.

Knowledgeable Research Vol 1, No 1, August 2022. ISSN 2583-6633

परानपुर टूट रहा है। उसके जीवन को बाहरी आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन प्रभावित कर रहा है। परती भूमि की दुख भरी कहानी कोसी नदी की क्रूद्ध से जीवन्त हो उठा है। नये प्रशासन की नयी-नयी योजनाओं के अधीन गांव का नक्शा भी बदल रहा है। क और सारा ग्राम नयी सामाजिक और राजनैतिक जीवन भूमि के इर्द-गिर्द घूम रहा है। जान पड़ता है कि कोसी अंचल की कुछ वर्षो की सारी जीवन-गति उपन्यास में उठाकर रख दी गई है।परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है जिसका प्रभाव मानव जीवन और मूल्यों पर दृष्टिगत होता है। "परती परिकथा" में सामाजिक सन्दर्भ में आये हुए परिवर्तनों द्वारा आहत ग्राम जीवन की मूल्यवत्ता का जीवंत चित्रण लक्षित होता है। परानपुर गांव अपनी पृथक् ही विशेषता रखता है। लेखन ने इसकी अनेक विशेषताओं के सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा है "ग्राम परनापुर" थाना रानीगंज, परानपुर की प्रतिष्ठा सारे जिले में है। लोग यहाँ दस वर्ष के लड़के से भी बात करते समय अपना पॉकेट एक बार टटोल कर देख लेते हैं। फारबिसगंज बाजार की किसी दुकान पर चले जाइए। ज्यों ही मालूम हुआ कि परानपुर का ग्राहक आया है, दुकानदार अपनी बिखरी हुई चीजों को समेटना शुरू कर देता है...... हाकिम हुक्काम भी यहाँ के लोगों से बात करते समय इस बात का ख्याल रखते हैं कि सिर्फ एक ही गांव में एक वर्ष के अन्दर सरकार की तीन-तीन विभागों के अधिकारियों की आँखों में धुली झोंकी गयी। ग्राम का है।"रेणु" को ग्राम परिवेश का समग्र बोध है। उन्हें उसके यथार्थ की गहरी परख और पहचान है जिसे वे लोक तत्वों की समाहिति से और भी गहरा चित्रित करते हैं। इस चित्रण में "रेणु' विभिन्न बारीकियों, अनेक कोणों एवं विविध आयामों से परिवेश की जीवन्त सृष्टि करते हैं।

हमारे देश के नेता और सरकारी अफसर किस प्रकार गांव का शोषण करते हैं इसका चित्र भी "जुलूस' में मिलता है। देवी प्रकोपों के समय पब्लिक कार्यकर्त्ताओं की स्वार्थ लिप्सा पर व्यंग्य करके "रेणु" ने इन नेताओं व सरकारी अपफसरों पर तीक्ष्ण प्रहार किया है। इस प्रकार शहरी मूल्यों का संक्रमण गांवों में भी हो रहा है। संत्रास, कुंठा, घुटन आदि शहरी तत्व अब धीरे-धीरे गांव में प्रविष्ट हो रहे हैं।

इस प्रकार नये गाँव की नयी समस्या, नये समाज की नयी प्रश्नशीलता और ऐतिहासिक सन्दर्भों में अपने इन नये गांव के नये सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षितिज का उद्घाटन "रेणु' की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

संदर्भ

[1] फणीश्वरनाथ रेणु मैला आँचल ।

[2] भारत यायावर, रेणु रचनावली- पृ० सं० 15

[3] भारत यायावर, रेणु रचनावली- पृ० सं० 16

[4] कुमकुम राय, प्रेमचन्द और फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में ग्राम्य जीवन और संस्कृति पृ० 133

[5] लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय हिन्दी उपन्यास उपलब्धियों, पृ0 61

16] 'मैला आँचल' पृ० 310

[7] स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास- डॉ० कांति वर्मा, पृ० 194

Knowledgeable Research Vol 1, No 1, August 2022. ISSN 2583-6633

[8] "परती परिकथा' पृ० 457

[9] श्री महेन्द्र चतुर्वेदी : "हिन्दी उपन्यास एक सर्वेक्षण' पृ० 212 [10] सम्पादकीय "नये उपन्यास" - आलोचना, अक्टूबर 57, पृ० 1[11] "जुलूस" पृ0 104

[12] रोल्पफ फॉक्स, उपन्यास और लोक जीवन पृ० 14